सितार वादन में जोड़–झाला वादन की तकनीक एवम महत्त्व

भगवंत कौर
शोधार्थी, संगीत–विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

वीणा वादन तत्त्वज्ञ श्रुति जाति विशारदः
ताल ज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्ग सगच्छति।।

जो वीणा वादन के तत्वों को जानता हो, श्रुति, जाति को जानता हो ओर जो ताल का ज्ञाता हो, वो बिना किसी प्रयास के मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। याज्ञवल्लक्य ऋषि द्वारा कहे गये ये वचन जहाँ श्रुति, जाति और ताल की महिमा का वखायान करते हैं, वही सर्वप्रथम वीणा वादन के तत्त्वों का संकेत भी देते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही वीणा वादन की विभिन्न तकनीकों का विकास हो चुका था, और उनका नियमित रूप में वादन किया जाता था। वीणाओं के कई प्रकार थे, कहने का भाव यह है कि उस समय सभी तंत्री वाद्यों को सामान्य रूप वीणा कहा जाता था। कालांतर में वीणा के कई रूप और नाम प्रचार में आए और कुछ वाद्य वीणा की पृष्ठभूमि में निर्मित हुए और उनको विभिन्न नामों से जाना गया। सब प्रकार की वीणाओं में कुछ सामान्य और कुछ व्यक्तिगत वादन तकनीक को अपनायी इस तरह सभी प्रकार तंत्री वाद्यों का अपना अस्तित्व स्थापित होता गया। सितार भी त्रितंत्री वीणा का विकसित रूप है इसकी वादन तकनीक में प्रारंभ से लेकर आज तक परिवर्तन होता गया। आज गायन की भांति सितार का वादन स्वतंत्र रूप से किया जाता है। इस प्रकार इसमें राग का प्रस्तुतिकरण आलाप, जोड़ालाप, जोड़ झाला, तत्पश्चात् विलंबित अथवा मसीतखानीगत और विभिन्न लयकारियों के तोड़े, रज़ाखानीगत उसके अंतर्गत तोड़े तथा अंत में झालावादन की प्रस्तुति करके समाप्त किया जाता है। सितार वादन के प्रत्येक चरण में अपनी विशेष तकनीक हैं, जो कि श्रम साध्य है। आज यह अनुभव किया जा रहा है कि सितार वादन में जोड़ आलाप के बाद बजायी जाने वाली जोड़ झाला की तकनीक धीरे–धीरे लुप्तप्राय होती जा रही है। ऐसा मत है कि झाला वादन के अंतर्गत ही जोड़ झाला का भी प्रदर्शन हो जाता है, तो अलग से जोड़ झाला क्यों बजाया जाए। लेकिन वस्तुतः सिथति ऐसी नहीं है। जोड़ झाला अपने आप में एक विशेष वादन तकनीक है, उसकी अपनी विशेषता और महत्त्व है। इस शोध पत्र में हमने सितार वादन में जोड़झाला वादन की तकनीक एवं महत्त्व पर विचार करने का प्रयास किया है।

जोड़–झाला का अर्थ एवं परिभाषा

सितार वादन में किसी भी राग को प्रस्तुत करते समय सबसे पहले राग का स्वरूप आलाप द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। वादन क्रिया का प्रारम्भिक चरण होने के कारण आलाप से ही राग की नींव रखी जाए तो वह सुन्दर प्रतीत होती है। आलाप करते समय राग के स्वस्थान नियमों का भी विशेष महत्त्व रहता है। स्वस्थान नियम के अन्तर्गत राग में आलाप शुरू करते समय मन्द्र सप्तक से विस्तार कार्य को आरम्भ किया जाता है। इस प्रकार राग के प्रत्येक स्वर की भूमिका को स्पष्ट करते हुए क्रमशः मन्द्र सप्तक, मध्य सप्तक और तार सप्तक तक राग का स्वरूप आलाप क्रिया द्वारा दिखाया

जाता है। स्वस्थान के पहले चरण में मन्द्र सप्तक के स्वरों म़ प़ ध़ नी आदि की बढ़त की जाती है। इस प्रकार ही दूसरे चरण में मध्य सप्तक के षड़ज स्वर से लेकर निषाद स्वरों तक आलाप को बजाया जाता है। जिसमें राग के स्वरुप को ध्यान में रखना आवश्यक माना जाना चाहिए। इस सप्तक में आते–आते स्वरों को बढ़त के द्वारा पेश किया जाता है। स्वस्थान नियम में वादी स्वर भी महत्त्व रखता है। राग में लगने वाला यह स्वर कौन से सप्तक में है। इसकी जानकारी भी जरूरी है। इस प्रकार बाकी स्वर जैसे संवादी, अनुवादी, विवादी स्वरों को समझ कर आलाप किया जाना चाहिए। कहने का भाव यह है कि वादी स्वर राग के जिस सप्तक में होगा वहां पर ठहराव के साथ–साथ मोहरा और मुखड़ा लगाने की सुविधा भी बनी रहती है। इसलिए राग में लगने वाले स्वरों को विशेष ध्यान में रखकर बढ़त का कार्य करना चाहिए। इन क्रियाओं से राग की रंजकता और रसात्मकता बनी रहती है। इसके साथ ही समान स्वरों वाले रागों का भी ध्यान रखकर मूल राग के आलाप को करना चाहिए। स्वस्थान के तीसरे चरण में तार सप्तक से लेकर बाकी स्वरों का विस्तार करना चाहिए। जिसमें लय का क्रमिक चक्र बढ़ा दिया जाता है। इस प्रकार आलाप समाप्त किया जाता है।

इसके पश्चात् सितार वादन में जोड़ को तकनीक का प्रारंभ किया जाता है। इस में लय को धीरे–धीरे और बढ़ा दिया जाता है। इसमें छोटे–छोटे स्वर समुदायों को बाज के तार और चिकारी के तार पर आघात करते हुए राग का विस्तार किया जाता है और लय को धीरे–धीरे बढ़ाया जाता है। "दोनों हाथों के समान प्रयोग होने के कारण ही इससे जोड़ कहते हैं।"[1] जोड़ का अर्थ है जोड़ना जोड़आलाप जोड़ आलाप में लयात्मकता के लिए 'दा और रा' दोनों बोलों का प्रयोग किया जाता है। जोड़ में बाज और चिकारी के तार पर आघातों का स्तर लगभग एक सामान हो जाता है। जिसके कारण इसे जोड़ की तकनीक कहा जाता है। राग के क्रमिक विस्तार में आलाप तथा जोड़–आलाप के पश्चात् जोड़–झाले की प्रक्रिया को दर्शाया जाता है। इसमें इस क्रिया को मिज़राब के विभिन्न–2 ढंगों तथा छन्दों में बांट कर सितार वादक और कलाकार अपने दाएँ और बाएँ हाथ का सन्तुलन बनाए रखता है तथा श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध भी करता है।

जोड़–झाला तकनीक का साधारण अर्थ है–जोड़ना। यह आलाप जोड़ झाला वादन क्रिया का मिश्रित रूप होता है। इसमें आलाप जैसे स्वर, जोड़ जैसी निरन्तरता और झाले जैसी लयकारियों का समावेश होता हे। इसलिए इस क्रिया में स्वरों को इस ढंग से जोड़ना चाहिए कि ताल वाद्य का प्रयोग न करते हुए लय का एक निश्चित क्रम बना रहना चाहिए।

डॉ. सुभद्रा चौधरी जोड़–झाले के बारे में लिखती हुई कहती है कि "प्राचीन रागालप्ति के रूप में बंदिश शुरू करने से पहले राग की जो विस्तृत अलप्ति की जाती थी, वह ध्रुपद में नोम्–तोम् बनी। यह नोम्–तोम् के आलाप ही जोड़–झाला के रूप में बाज का खास अंग बना।" इस प्रकार से जोड़–झाला आलाप और रज़ाखानी गत के बीच की एक कड़ी है। जोड़–आलाप में जहाँ स्वर–विस्तार पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। वही जोड़–झाले में स्वरों के साथ–साथ मिज़राबकारी का कार्य भी किया जाता है। जिसमें रस अभिव्यक्ति के साथ–साथ कलात्मक पक्ष भी सुनाई देता है।

1 सितार वादन की शैलियाँ, डॉ रजनी भटनागर, पृष्ठ–124

जोड़–झाला बजाने की तकनीक

सितार में जोड़–झाला वादन की तकनीक को आलाप और जोड़–आलाप का ही विकसित रूप कहा गया है। जोड़–झाला वादन में आलाप में बजाये जाने वाले स्वरों को लय में इस विधि पूर्वक प्रयोग किया जाता है, जिससे बजाये जाने वाले स्वरों में लयत्मकता सुनाई देती है। किसी प्रकार के लय वाद्य का प्रयोग नहीं किया जाता, कहने का अभिप्राय यह है कि जोड़–झाला तालबद्ध नहीं होता। इसमें मिज़राब के बोलों द्वारा छन्दों में राग के स्वरों का बढ़त कार्य किया जाता है।

जोड़ झाला में बजाये जाने वाले मिजराब के बोल एवमं छन्द

जोड़ झाला 'वादन में मिज़राब के बोलों का सर्वप्रथम छेड़ के तारों पर 'रा' बोल का उल्टा प्रहार किया जाता है। तत्पश्चात् बाज़ के तार पर दा का बोल अर्थात सीधा प्रहार लगाकर लगातार विभिन्न प्रकार के गणितक छंद बनाये जाते हैं। इस प्रकार रा दा रा दा रा दा रा दा के बोल चिकारी और बाज के तार पर बजा कर एक लय पैदा की जाती है, जो कि सुनने में कणप्रिय एवं सुखद प्रतीत होती है। जोड़ झाला में लय चक्र चार–चार के विभाग में बांट दिया जाता है, जो कि एक गणितक प्रक्रिया है तथा इसमें स्वरों के प्रयोग के साथ–साथ मिज़राब के बोलों का कार्य भी बढ़ जाता है। इस तकनीक में मिज़राब के बोलों का प्रयोग छन्द के रूप में किया जाता है। यह छंद चिकारी और बाज़ के तार पर एक समान बजायें जाते हैं। जोड़ झाला में मिज़राब के कुछ बोल इस प्रकार हैं:–

रा दा दा दा, रा दा दा दा, रा दा दा दा, रा दा दा दा

इस छंद में चार–चार मात्रा में चार विभाग हैं। इसमें 'रा' का बोल मिज़राब द्वारा चिकारी के तार पर जोर से आघात किया जायेगा।

दा दा रा दा दा रा दा रा, दा दा रा दा दा रा

इस छंद में आठ–आठ मात्रा के दो विभग हैं इसमें मिज़राब के दा बोल पर जोर से आघात किया जायेगा।

रा दा दा रा दा दा रा दा, रा दा दा रा दा दा रा दा

यह छंद आठ–आठ मात्रा के दो विभाग में है। छंद के इस प्रकार में मिज़राब के 'रा' बोल पर जोर से आघत किया जायेगा जो कि सुनने में सुंदर और विचित्र लगता है। उपर्युक्त मुख्य छंदो को आधार पर मिज़राब की सहायता द्वारा अनेक प्रकार की गणितिक छंदों का निर्माण किया जा सकता है। जिसमें कुछ सरल और कुछ कठिन बोल भी हो सकते हैं। जोड़ झाला सितार वादन पर बजायी जाने वाली एक व्यावहारिक तकनीक हैं जिसको साधना और अभ्यास के द्वारा साधा जा सकता है। जोड़ झाला के कुछ अन्य प्रकार इस तरह से है :–

रा दा दा दा, रा दा रा दा, रा दा दा दा, रा दा रा दा

इस छंद में चार दो–दो मात्रा के आठ मिज़राब के बोल प्रयुक्त होते हैं।

रा दिर दा रा, रा दिर दा रा, रा दिर दा रा, रा दिर दा रा

इस छंद में बाज के तार पर मिज़राब द्वारा दिर का बोल बजाया जाता है।

दिर दिर रा दिर दिर रा दिर

तीन–तीन दो मात्रा के इस छन्द में दो बार दिर का बोल चिकारी पर प्रयुक्त होता है।

रा दिर दिर दिर, रा दिर दिर दिर, रा दिर दिर दिर, रा दिर दिर दिर

इस छंद में रा का बोल चिकारी के तार पर उल्टा प्रहार करके और दिर का बोल बाज के तार पर तीन बार बजाया जाता है।

इस प्रकार राग के स्वरूप को ध्यान में रखकर ये छन्द बजाये जाते हैं। जोड़ा झाला वादन में सितार वादक जितना अधिक कल्पनाशील होता है, उतना ही वह अधिक छंदों का प्रयोग और स्वर विस्तार करता है।

जोड़ झाला में प्रयुक्त सौन्दर्यात्मक तत्त्व

जोड़–झाला में कण, मीड़, जमज़मा, कृन्तन, ठोंक, घसीट, छूट, ज़रब, तान, गमक इत्यादि वादन तकनीक का बाखूबी से प्रयोग किया जाता है। जोड़ झाला में ज़मज़मा वादन की तकनीक का उदाहरण इस प्रकार से है–

रा दा दा रा दा दा रा दा रा दा दा रा दा दा रा दा

स षडज षडज

नीसरेस
ज़मज़मा द्वारा

मिज़राब के 'रा' बोल को चिकारी की तार पर और 'दा' का बोल बाज के तार पर षडज स्वर बजारया जायेगा। आखिर इस छंद के आखिरी 'रा' क बोल पर ज़मज़मा तकनीक द्वारा नीसरेस बजाये जायेंगे। सितार वादन में दो या दो से अधिक स्वरों को एक दूसरे के बाद एक दूसरे के बाद एक ही आघात में जल्दी–जल्दी बजाने से जो एक प्रकार की हिलती हुई आवाज़ उत्पन्न होती है, उसे ज़मज़मा कहते हैं। जब एक स्वर को तर्जनी उंगली द्वारा दबा कर ध्वनी उत्पन्न करके उसके अगले स्वर पर मध्यमा उंगली द्वारा ज़ोर से मारने पर उसकी हल्की सी ध्वनि सुनाई पड़ती है, इस क्रिया को कम से कम दो य अधिक बार करना ही ज़मज़मा कहलाता है।

जोड़–झाला वादन में घसीट वादन तकनीक इस प्रकार है।

रादादारादादारादा, रादादारा दादारादा

धैवत स्वर धैवत स्वर

धनीसरे

घसीट द्वारा

रादादारादादारादा बोल को चिकारी और बाज की सहायता द्वारा धैवत स्वर पर बजाया जाऐगा। आखिर के दादारादा बोल के 'रा' बोल पर घसीट तकनीक में धैवत पर आघात करते हुए धनी सारे चार स्वरों को मिज़राब के एक बोल (रा) बजाया जाता है। यह बाज के तार पर मिज़राब का उल्टा प्रहार होता है।

घसीट तकनीक का सम्बन्ध घर्षण से है। सितार वादन में जब बाए हाथ की तर्जनी या मध्यमा द्वारा एक स्वर से चौथे या अधिक दूरी बाले स्वर पर तेजी से घसीट कर जाते हैं और ध्वनि भी खण्डित नहीं हो पाती तथा बीच के अन्य स्वर स्पष्ट रूप से सुनते हैं तो इस क्रिया को घसीट कहते हैं। इस प्रकार जोड़ झाला में सौन्दर्य तकनीक के साथ दाएं तथा बाएं हाथ के संयुक्त संचालन से इस तकनीक का विस्तृत वादन किया जाता है। जोड़ झाला वादन में तान और टुकड़ों का प्रयोग। सितार वादन की जोड़ झाला तकनीक में छोटी–छोटी तानों का प्रयोग भी किया जाता है। जोड़ झाला में राग के स्वरूप के अनुसार तानों के द्वारा बढ़त की जाती है। राग यमन में उदाहरण इस प्रकार है।

– नी रे ग	– रे ग म	– ग म ध	– म ध नी
र दा रा दा	र दा रा दा	र दा रा दा	र दा रा दा

इस में रा का बोल चिकारी के तार पर और दा रा दा का बोल क्रमवार बाज के तार पर बजाया जायेगा। –नी रे ग (रा दा रा दा) स्वर की घसीट में र का बोल चिकारी के तार पर उल्टके प्रहार से बजाया जायेगा और नी रे ग में नी पर 'दा' का बोल बजाते हुए नी रे ग स्वरों को घसीटते हुए इस क्रिया वादन किया जायेगा। इस प्रकार से ऐसी तानों को राग वाचक टुकड़ों द्वारा जोड़ झाला में बजाया जाता है।

मोहरा और मुखड़ा

धीरे–धीरे लय बढ़ाकर दिर दिर दा रा दा दा रा दा की मिज़राब के बोलों को झोल की भाँति बजाया जाता है। इस प्रकार से अलग–अलग विधियों से जोड़–झाला को बाँधकर बजाया जाता है। इसमें बार–बार उन्हीं स्वरों का प्रयोग किया जाता है। जिसके द्वारा राग का स्वरूप प्रगट होता है। अन्त में मोहरे के निर्धारित बोल दा रा रा दा रा रा दा दा रा दा (अंत में दा सम लगाकर) का प्रयोग करते हैं।

जोड़ झाला की समापन क्रिया

जोड़–झाला की इस तकनीक में दा दा रा दा दा रा दा– दा दा रा दा– दा दा रा दा– दा दा रा दा– इस प्रकार के मिज़राब के बोलों को बाज के चिकारी के तार पर तीन बार बजाकर इस तकनीक का समापन किया जाता है।

जोड़–झाला में कण, मीड़, जमज़मा, कृन्तन, ठोंक, घसीट, छूट, ज़रब, तान, गमक इत्यादि वादन तकनीक का बाखूबी से प्रयोग किया जाता है। जोड़–झाला में बाज (ब) का तार और (चि) चिकारी के तार के अतिरिकत सभी तारों को मिश्रित रूप में छोड़ा जाता है। जोड़ झाला–वादन की तकनीक में

राग के वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वरों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। एक–एक स्वर का छन्द के रूप में विस्तार करते हुए और वादी स्वर को प्रधानता प्रदान करते हुए जोड़–झाला वादन के क्रम को आगे बढ़ाना चाहिए। सितार वादन में जोड़–झाला की तकनीक लयकारियों से भरपूर होती है। आलाप में तो केवल मिज़राब के एक ही आघात द्वारा दो, तीन या चार स्वरों का भी प्रयोग करते हैं परन्तु जोड़ में अधिकत्तर जितने आघात उतने ही स्वर भी बजाये जाते हैं।

इसमें मिज़राब के बोल बदलते रहते है। इसलिए किसी राग को और उसमें लगने वाले स्वरों की पहले भलीभाँति समझना आवश्यक है। जिसके द्वारा इस क्रिया में मीड़ आदि का कुशलतापूर्वक प्रयोग सम्भव हो जाता है। इससे जोड़–झाला मे मोहरे आदि बजाने में मदद मिल जाती है।

जोड़ की तकनीक को पहले स्थाई और संचारी तथा अन्तरा और आभोग को ठाह में बजाया जाता है। इस क्रिया के अन्तगर्त मिज़राब के बोलों को लय में बाँध लिया जाता है। दा रा दा दा रा दा दा रा के बोलों को बजाया जाता है। कहीं विवादी स्वर का प्रयोग न हो जाए, इसलिए जोड़ की हर तान में और बोल में वादी, संवादी और बाकी स्वरों का ध्यान रखना पड़ता है। जोड़–झाला वादन में किसी भी ताल अंग की आवश्यक्ता नहीं होती है। सिर्फ लय का आभास मिजराब के बोलों द्वारा होता है।

जोड़ झाले का महत्त्व

सितार वादन की अन्य तकनीकों के समान जोड़–झाला वादन तकनीक का भी सितार वादन की तकनीकों में मुख्य स्थान है। इस तकनीक के अन्तगर्त राग में लगने वाले स्वरों को ऐसे ढंग से पेश किया जाता है। जिसमें लय तो होती है। लेकिन किसी लय वाद्य का प्रयोग नही किया जाता। जोड़–झाले में छन्दों का बहुत महत्त्व है। इस क्रिया में विभिन्न–2 बोलों द्वारा विभिन्न प्रकार के छन्दों को तैयार किया जाता है। इस क्रिया को विभिन्न प्रकार के छन्दों से सजाया जाता है। जोड़–झाला, जोड़–आलाप और रज़ाखानी गत को एक कड़ी में जोड़ने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। आलाप को लय के साथ जोड़ने की क्रिया जोड़–आलाप है। इस प्रकार से जोड़–आलाप में छन्दों का समावेश करके जोड़–झाले को प्रस्तुत किया जाता है।

जोड़–झाले में पखावज और तबले की परनों से मिज़राब के बोलों को छन्द में पिरोया जाता है। इस प्रकार से इस क्रिया में छन्द का विशेष स्थान होता है। इसमें तिहाई की विशेष महत्ता रहती है। जोड़– झाला इसलिए भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह लयहीन आलाप की क्रिया को लय रूपी धागे में पिरोने का काम करता है। आलाप, जोड़–आलाप के बाद जब जोड़ झाला बजाया जाता है तो यह क्रिया एक निश्चित गति की ओर वादन क्रिया को जोड़ने में सहायता करती है।

कुछ गुणीजन जोड़–झाला वादन की क्रिया को महत्त्व नहीं देते। उनका मानना है कि जोड़–झाला वादन की लगभग सभी क्रियाओं को हम झाला वादन तकनीक में दिखा सकते हैं। इसलिए जोड़ अंग महत्त्व नहीं रखता परन्तु यहाँ एक बात जरूरी है कि जोड़–झाला अपने–आप में सितार वादन की एक अलग तकनीक है। इस तकनीक की अपनी अलग पहचान है क्योंकि इसके साथ किसी भी प्रकार का कोई तालवाद्य प्रयोग नहीं होता। जबकि झाला वादन में ताल वाद्य होता है। जोड़–झाला में

लय कलाकार और सितार वादक के दिमाग में ही विद्यामान रहती है। जिसको वह अपनी सूझबूझ और कल्पना शक्ति के द्वारा विभिन्न छन्दों की सहायता से अपने वाद्य पर प्रस्तुत करता है।

जोड़ झाला तकनीक का प्रचार कम होने के कारण

आज के समय में जोड़–झाले की तकनीक कम बजने का एक कारण यह भी हो सकता है कि आज लोगों के पास सुनने के लिए न तो अधिक समय है और न ही अधिक धैर्य है। जिसके कारण इस तकनीक को झाला वादन तकनीक में ही बजा कर समाप्त कर दिया जाता है परन्तु जोड़–झाले की महत्त्व को देखते हुए कहा जा सकता है कि जोड़–झाला अपने–आप में एक अलग तकनीक है, जो बजाने और सुनने में बहुत अच्छा लगता है। इसे भलीभाँति गुरूमुख से सीख कर बजाना चाहिए। यह लय में होते हुए भी बिना लय वाद्य के बजाया जाता है। जिसकी अपने–आप में एक विशेष खासियत हैं। सितार वाद्य में पहले राग प्रस्तुतिकरण में जहाँ सम्पूर्ण प्रस्तुति आलाप और जोड़ में ही हो जाती थी। वही आज गत और तोड़े आदि को ज्यादा बजाकर आलाप और जोड़–झाला की नामात्र बजाया जाता है। यह तकनीक मुल्यवान है। जिसको प्रचार–प्रसार में लाने का श्रेय इमदादखानी घराने को जाता है। इस घराने द्वारा सबसे पहले गायकी अंग की चीजों को वाद्य–वादन में बजाना प्रारम्भ किया। इन प्रकार इस घरानें के कलाकारों द्वारा जोड़ और जोड़–झाले में छन्द लयकारियों को प्रचार–प्रसार में लाने का श्रेय जाता है। जिसमें उस्ताद विलायत खां साहब का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने इस तकनीक में छन्द और लयकारियों का समावेश किया है। पंडित रविशंकर द्वारा भी तंत्रकारी अंग द्वारा जोड़–झाला को खूब बजाया गया। उस्ताद मुशताक अली और उस्ताद अलाउदीन खां साहब का भी प्रचार–प्रसार में योगदान रहा है।

इस प्रकार से इस तकनीक का अधिक से अधिक वादन होना चाहिए और बच्चों को भी सिखाया जाना चाहिए जिसके द्वारा इस तकनीक को अधिक से अधिक प्रचार प्रसार में लाया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

रजनी भटनागर, सितार वादन की शैलियाँ, कनिष्ठ पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5–21,अंसारी रोड़, दरियागंज नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–2006।

डॉ॰ लालमणि मिश्र, तंत्री नाद, साहित्य रत्नालय गिलिश बाजार, कानपुर, 209, प्रथम संस्करण।

वसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस, जुलाई 1986।